International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-06-2019; Accepted: 27-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 79-80

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में उपेक्षित नारी

आर. गायत्री
श्री वेंकटेश्वरा विश्व विद्यालय, तिरुपति, चित्तूर, आंध्र प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

कहानी आज के जीवन की जीवंत विधा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में कथा साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। समसामयिक जीवन को समग्रता एवं संपूर्ण गंभीरता के साथ प्रस्तुत करने की सार्थक क्षमता कथा साहित्य में परिलक्षित होती है। इन मे जीवन और जगत का सत्य विभिन्न रूपों में व्यक्त किया जा सकता है।मानव जीवन के अत्यंत निकट होने के कारण उपन्यास और कहानी सर्वाधिक लोकप्रिय विधाएँ बन गई है।वस्तुतः कहानी उपन्यास से सरल और रोचक होती है,क्योंकि कम समय में ही जीवन की गतिविधियों का रूपायन करती है। कहानी मानव जीवन से गहरे रूप में जुड़ी रहती है।कहानी की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। जीवन से सम्बन्ध यथार्थ घटनाओं का अनुभूतिपूर्वक अभिव्यक्त करना ही कहानी का मुख्य उद्धेश्य रहा है।कहानी तथा उपन्यास में नारी की कई समस्याओं को निरंतर निरूपित करने का प्रयास होता आया है।।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में उपेक्षित नारी समस्याओं का उल्लेख मिलता है।कहानिकारों ने कहानियों के माध्यम से उपेक्षित नारी की मानसिकता को बताते हुए उन के जीवन को नया मोड़ देने का प्रयास किया।

अंतिम दशक की हिंदी कहानियों मे उपेक्षित नारी पात्र चित्रण इस प्रकार है - प्रमुख लेखिका मालती जोशी की कहानी ' पिया पीर न जानी 'मे 'रमा' बी ए पढकर, ५-६ साल का अनुभव रखते हुए भी अपनी पारिवारिक आर्थिक कमजोरी के कारण मजबूरी से इंटर पास की दुहाजू पुरुष के साथ शादी कर लेती है।सास के मना करने से मन में चाहते हुए भी नौकरी करने की इच्छा को मन से निकाल देती है।ससुराल में देवर और देवरानी दोनों डाक्टर्स हैं।वे दोनों शहर में रहते हैं। उनके बडा क्लिनिक खोलने की योजना से गाँव में जमीन बेचते हैं। रमा लोगों को भी अपने साथ शहर ले जाते हैं। वहाँ रमा घर का पूरा काम संभालने पर भी सास की चीत्कारों से बच नहीं पाती । वहाँ रमा को पहली बार अपनी पराधीनता का बोध होता है।रमा को अपने पति की गैरजिम्मेदारी के कारण यह सब कष्ट झेलना पडता है।फिर भी सासजी अपने बेटे की इस अकर्मण्यता केलिए रमा को ही कोसती हुई कहती है- " एक लक्ष्मी घर में आती है तो घर भर देती है. एक ये ऐसी आयी है कि पुरखों की जायदाद भी बिकवा दी।" (१)

रमा अपने पति और सास के व्यवहार से तनाव ग्रस्त हो जाती है।इस हालत में वह कहीं दूर जाकर नौकरी करने का अटल निर्णय ले लेती है।मन के दुःख को अपने देवर से बाँटती हुई कहती है -- " ईश्वर करे आप सौ साल जिंदा रहे,पर मैं अब यह मृतप्राय जिंदगी और नहीं जी सकती।. यहाँ मेरा दम घुटता है.मैं खुली हवा में साँस लेना चाहती हूँ।" (२)

इस प्रकार रमा अपनी मन का बोझ कम करना चाहती है. अपनी हर संवेदना को,हर अरमान को सदा उपेक्षा करते हुए नजर आते पति को भी अपना निर्णय बता देती है।जब रमा को नयी नौकरी मे दाखिल होने का जायनिंग पत्र मिलता है तब रमा अपने को भी साथ ले चलने की माँग करते हुए पति से कहती है– "' तुम अकेला कहाँ हो?यहाँ तुम्हारी माँ है, भाई है, भतीजे हैं।आउटसाइडर तो इस घर मे मैं थी, मेरे बच्चे थे।तुम्हारा तो पूरा परिवार है।"(३)

अंत तक आते आते कहानी में पति रमा को जाने से रोकने का बहुत प्रयास करता है।अपनी गलती पर पछतावा करता है।पत्नी को समझाने की कोशिश मे कहता है --"'नहीं हैं, मेरा कोई नहीं है।मुझे कोई नहीं चाहता।अम्माजी भी नहीं ।सब मन ही मन मेरा तिरस्कार करते हैं। नौकर चाकर तक मुझे हिकारत से देखते हैं। पिछले दिनों तुम घर में रहकर भी बेखबर थी. बेसुध थी।उस समय मैं ने अनुभव किया कि उस घर में मेरा जो भी स्तान है, रुतबा है, तुम्हारे दम से हैं. तुम मेरी बैसाखी हो।तुम्हारे बिना मैं एक कदम भी नहीं चल पाऊँगा।"'(४) पति मे इतना परिवर्तन के बावजूद भी रमा घर छोडकर जाने का निर्णय ले लेती है।इस प्रकार एक गृहणी ससुराल मे सभी जिम्मेदारियों को संभालते हुए भी सास और पति से उपेक्षा की जाती है।जीवन के लंबी सफर के बाद भी अपनी मजबूरी से नौकरी करके आत्मसम्मान से जीना चाहती है।

इसी प्रकार लेखिका मालती जोशी की कहानी " अग्निपथ "मे 'चंदा ' की शादी विदेशी कंपनी के एक्जीक्यूटिव से हुई।

वह कंपनी डूब जाने से चंदा का पति बेकार हो जाता और उसी स्तर की नौकरी न मिलने पर वह बेकार ही बैठा रहा। चंदा को दो बेटे भी हो गए। चंदा की नौकरी करना ससुराल वालों के अहं के खिलाफ था। एक बार चंदा अपनी सहेली शालू से इस प्रकार कहती है-- "'बर्दाश्त की भी एक हद होती है शालू. और वह मैं पार कर चुकी हूँ।मैं ने श्रीमान जी से कहा कि –"' जब तक आपके मनलायक काम नहीं मिल जाता मुझे नौकरी करने दीजिए। मैं अपने बच्चों को दूसरों के टुकड़ों पर नहीं पाल सकती।आखिर मेरा पढा-लिखा कब काम आएगा।बस मेरा इतना कहना था कि घर में जैसे तूफान आ गया।लेकिन मैं ने भी अब ठान लिया है। तबीयत का बहाना बनाकर आ गई हूँ। अब यहीं कुछ करूँगी। "'(५)

चंदा मायके आकर नौकरी करने लगी और फिर अलग घर ले रहने लगी।इसी बीच उस के पति का एक्सिडेंट हो गया। कमर के नीच का पूरा भाग बेकार हो गया।पति और सास चंदा के पास ही आ गए।तब चंदा अपनी वेदना प्रकट करती हुई कहती है– "'शालू मैं बडी खुश थी कि उस नरक से निकल आई हूँ.पर भाग्य तो देखो नरक मेरा पीछा करता हुआ यहाँ तक चला आया है। "'(६)

चंदा नौकरी करके सास और पति के पोषण भार अपनी ऊपर ले लेती है।फिर भी सास सारा दिन उसे कोसती रहती ।तीन साल बाद पति की मृत्यु हो गई।चुटकी भर सिंदूर ने चंदा के जीवन को राख बना रखा था।सास चंदा को कोसती हुई कहती है – "' ऐसे लच्छन है , तभी तो भी जवानी में सुहाग उजड गया।भगवान सब देखते हैं। "' चंदा भी पलटकर कहती है -- "' कुछ तो तुम्हारे कर्मों का भी दोष होगा अम्मा।नहीं तो बुढापे मे तुम्हें ये सब क्यों झेलना पडता। रही मेरे सुहाग उजडने की बात, तो मैं सुहागवती थी ही कब ? मेरा गठजोड तो दुर्भाग्य के साथ हुआ था वह तो अब भी मेरे साथ है।फिर मातम किसका मनाऊँ। "' (७)

इस प्रकार कहानी मे चंदा को विधवा के रूप मे उपेक्षित वर्ग मे रहना पड़ता है।

कहानीकार रश्मीकुमार से विरचित " जल जल उठी लडकियाँ ' कहानी में पढी-लिखी नारी की उपेक्षा का चित्रण वर्तमान युग के सापेक्ष्य मे किया गया है। कहानी में दीपा का विवाह अपनी सहेली नयनिका की दूर के रिश्तेदार लडका उमेश के साथ होता है।उमेश एक ऐसा पुरुष था, जिसे परिवार के प्रति कोई जिम्मेदारी ही नहीं थी। वह अपने गैर जिम्मेदार व्यवहार का समर्थन करते हुए कहता है -- "' मैं किसी से नहीं डरता, जायज बात मुँह पर कहता हूँ।किसी को अच्छा लगे या बुरा, मेरी बला से।" (८)

दीपा पति के व्यवहार बहुत डर जाती है। वह पति के गैर जिम्मेदार व्यवहार को न बर्दाश्त कर पाती है और न ही उस से कह पाती है। शादी से पहले ही दीपा की सहेली नैना से रिश्तेदार कहते भी है कि -- " उमेश जैसे लडके से तुम्हारी सहेली निभातो लेगी ? जैसा गुस्सैल और बददिमाग है उस केलिए बहुत समझदार और धैर्यवान लडकी ही चाहिए।"(९)

उमेश पत्नी पर हर वक्त शासन करने केलिए ही सोचता रहता है। दीपा की हर बात को महत्व न देकर उपेक्षा करता है।उमेश हर समय जान लेने की धमकी देता रहता है।इस संदर्भ मे दीपा अपनी सहेली से कहती है --"मेरा क्या अपराध है नैना ,यही न कि इन सब के कहने के पहले मैं चाहकर भी मर नहीं सकती .हर वक्त मरने की ही धमकी क्यों देते हैं लोग।"(१०)

पढी-लिखी और नौकरी करनेवाले पति के होने के बावजूद भी ससुराल में वह सास और पति से उपेक्षित हो जाती है।सब को हिम्मत दिलानेवाली दीपा अंत में हिम्मत हार जाती है।आत्महत्या करनेवालों के प्रति विरुध्द दृष्टिकोण रखनेवाली दीपा कहानी के अंत में खुद आत्महत्या करने की ओर आकर्षित हो जाती है। इस प्रकार नारी एक हद तक ही उपेक्षा की स्तिथियों को सह सकती है। स्तिथियाँ गंभीर होने पर वह अपने को खत्म कर लेने की सोचती है।

यह नारी की सब से बडी विडंबना है। कहानीकार त्रासद स्थतियों से बचने केलिए आवश्यक बोध जगाता है कि आत्महत्या कोई जवाब नहीं है, वह कायरता मानी जाती है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि 20वीं सदी के अंतिम दशक की कहानियों में नारी के उपेक्षित जीवन को बेहद सच्चाई, ईमानदारी व सामाजिक दाइत्व के साथ प्रस्तुत किया गया है। जो समसामयिक जीवन में हमें देखने को मिलता है। उन के द्वारा प्रयुक्त ये सार्थक प्रयत्न न केवल उपेक्षित नारी जीवन के कारणों को टटोलते हैं बल्कि उन का हल ढूँढ कर नारी जीवन के प्रति एक नया बोध जगाते हैं। ये कहानियाँ नारी जीवन की विसंगतियों को साक्षात्कार करने के साथ - साथ विसंगति के जिम्मेदार तत्वों से लडने और स्वच्छ एवं सुख जीवन के प्रति नारी की प्रतिबद्धता को जागृत करने में अत्यंत सक्षम है।

संदर्भ सूची

1. मालती जोशी -- पिया पीर न जानी -- पृष्ठ संख्या-- ३२
2. मालती जोशी-- पिया पीर न जानी -- पृ.सं-- ४१
3. मालती ज़ोशी -- पिया पीर न जानी --पृ.सं.--४२
4. मालती जोशी --पिया पीर न जानी -- पृ.सं.--४२
5. मालती जोशी –-पिया पीर न जानी -- अग्निपथ --पृ.सं.--९८
6. मालती जोशी--पिया पीर न जानी--अग्नि पथ -- पृ.सं.--१००
7. मालती जोशी --पिया पीर न जानी-- अग्निपथ ---पृ.सं.--१०३
8. रश्मीकुमार --दहलीज के उस पार -- जल जल उठी लडकियाँ --पृ.सं.--१४
9. रश्मीकुमार --दहलीज के उस पार --जल जल उठीं लडकियाँ --पृ.सं.--१८
10. रश्मीकुमार --दहलीज के उस पार --जल जल उठीं लडकियाँ --पृ.सं.--१९